AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | An Open Access & Indexed
Volume 07 | Issue 08 | August 2026 | *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 07-14

सीधी जिले में जैविक खेती के विकास की संभावनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

ज्योति सोनी[1] डॉ. आर.पी. सिंह[2]

[1]शोधार्थी भूगोल, संजय गांधी स्मृति शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)
[2]अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा, रीवा एवं शहडोल संभाग

शारांश –

सीधी जिले में जैविक खेती के विकास की संभावनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन एक महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य है, जिसका उद्देश्य जिले में जैविक कृषि के प्रसार, इसकी उपयुक्तता तथा इससे जुड़ी भौगोलिक विशेषताओं का विश्लेषण करना है। सीधी जिला जो मध्यप्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है, यहाँ की जलवायु, मिट्टी की बनावट, जल स्रोतों की उपलब्धता एवं पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ जैविक खेती के लिए अनुकूल मानी जाती है। इस अध्ययन में क्षेत्रीय किसान रासायनिक खादों और कीटनाशकों के बढ़ते दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक हो रहे हैं और धीरे–धीरे जैविक विधियों से खेती की ओर अग्रसर हो रहे हैं। अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि पर्वतीय तथा पठारी भागों में वर्षा आधारित कृषि को जैविक स्वरूप देना अपेक्षाकृत सरल है। इसके अतिरिक्त, जिले में पशुपालन और वर्मी कंपोस्ट जैसी सहायक गतिविधियाँ जैविक कृषि को प्रोत्साहित कर सकती हैं। यद्यपि आधारभूत संरचना, प्रशिक्षण एवं विपणन की सुविधाओं की कमी समस्यायें प्रस्तुत करती हैं, फिर भी सरकारी योजनाओं, गैर–सरकारी संस्थाओं और स्थानीय पहल के सहयोग से सीधी जिले में जैविक खेती के व्यापक विकास की प्रबल संभावनाएँ विद्यमान हैं।

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Jyoti Soni Research Scholar, Dept. of Geography, Sanjay Gandhi Memorial Government PG College, Sidhi (M.P.), India Email: jyotisoni1581994@gmail.com	

शब्द संकेत – सीधी जिला, जैविक खेती, आर्थिक विकास, कृषि, प्रशिक्षण, योजनाएं, विपणन व्यवस्था आदि।

प्रस्तावना –

भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ की विशाल जनसंख्या एक बड़ा भाग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर करता है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का महत्त्वपूर्ण योगदान है, किन्तु वर्तमान समय में खेती की पारंपरिक पद्धतियों में विशेष रूप से रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर आधारित कृषि प्रणाली, अनेक समस्याओं को जन्म दे रही हैं। रासायनिक खेती से जहाँ एक ओर अल्पकालिक उत्पादन में वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी ओर मिट्टी की उर्वरता में गिरावट, जल स्रोतों का प्रदूषण, खाद्य सामग्री की गुणवत्ता में कमी तथा पर्यावरणीय असंतुलन आदि अनेक गंभीर समस्याएँ सामने आई हैं। इन समस्याओं के निराकरण हेतु जैविक खेती को एक वैकल्पिक, टिकाऊ एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि पद्धति के रूप में देखा जा रहा है।

जैविक खेती एक ऐसी प्रणाली है जो प्राकृतिक संसाधनों– गोबर, वर्मी कम्पोस्ट, नीम की खली, जीवामृत एवं दशपर्णी अर्क आदि का उपयोग करके फसलों की उपज को बढ़ाती है और पर्यावरण को सुरक्षित रखती है। यह खेती न केवल मृदा व स्वास्थ्य की रक्षा करती है, बल्कि जल संरक्षण, जैव विविधता के संरक्षण तथा किसानों की आत्मनिर्भरता को भी प्रोत्साहित करती है तथा मुख्य रूप से से ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में जहाँ रासायनिक कृषि संसाधनों तक ही कृषकों की पहुँच है, वहाँ जैविक खेती अधिक उपयुक्त और प्रभावशाली सिद्ध हो सकती है।

मध्यप्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित सीधी जिला एक अर्द्ध–आदिवासी बहुल्य, वन क्षेत्रीय और पर्वतीय भू–भाग है। यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ– मध्यम वर्षा, विविध प्रकार की मिट्टी, वन संसाधनों की उपलब्धता और पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ एवं जैविक खेती के लिए विशेष रूप से अनुकूल मानी जाती हैं, आज सीधी जिले की जनसंख्या का एक बड़ा भाग कृषि पर निर्भर है, किन्तु अधिकांश किसान लघु एवं सीमांत श्रेणी के हैं, जिनके पास सीमित भूमि, संसाधन और तकनीकी जानकारी होती है। ऐसे में महँगे रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक इनके लिए

बोझ बनते जा रहे हैं। दूसरी ओर जैविक खेती में कम लागत में स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके लाभकारी उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

सीधी जिले में जलवायु की दृष्टि से खरीफ एवं रबी दोनों फसली की कृषि होती है। जिनकी मुख्य फसलें– धान, गेहूँ, मक्का, चना, मसूर एवं सरसों आदि हैं। जिले की अधिकांश कृषि वर्षा पर निर्भर करती है और यहाँ की मिट्टी – काली, लाल एवं दोमट प्रकार की जैविक पदार्थों को अवशोषित करने की अच्छी क्षमता रखती है और साथ ही जिले के कई भागों में पशुपालन एक सहायक व्यवसाय के रूप में प्रचलित है, जो जैविक खाद (गौमूत्र, गोबर व कम्पोस्ट आदि) की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित कर सकता है।

इसके अतिरिक्त स्थानीय किसान परंपरागत कृषि ज्ञान से भी संपन्न हैं, जिसमें प्राकृतिक कीटनाशक, बीज संरक्षण की विधियाँ और बहुफसली खेती की तकनीकें शामिल हैं। ये सभी तत्व जैविक खेती के लिए एक सशक्त आधार प्रस्तुत करते हैं। लेकिन कृषकों के समक्ष कुछ प्रमुख समस्यायें बनी हुयी है, जिनमें– किसानों में जागरूकता की कमी, प्रशिक्षण की अनुपलब्धता, जैविक उत्पादों के विपणन की समुचित व्यवस्था का अभाव, सरकारी योजनाओं की सीमित पहुँच तथा प्रमाणन की जटिल प्रक्रियाएँ आदि मुख्य हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकार, गैर–सरकारी संगठनों और स्थानीय संस्थाओं को समन्वित रूप से कार्य करना होगा।

मध्यप्रदेश सरकार ने ''जैविक खेती मिशन'' के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं की शुरुआत की है, जिनका उद्देश्य किसानों को जैविक खेती के प्रति प्रोत्साहित करना, प्रशिक्षण देना, वर्मी कम्पोस्ट इकाइयाँ स्थापित करना तथा विपणन हेतु सहयोग प्रदान करना है। यदि इन योजनाओं का क्रियान्वयन प्रभावी ढंग से हो, तो सीधी जिले में भी जैविक कृषि का स्वरूप व्यापक रूप से विकसित किया जा सकता है।

इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि सीधी जिले की भौगोलिक विशेषताएँ जैविक खेती के लिए किस प्रकार अनुकूल हैं और किस प्रकार की रणनीतियाँ अपनाकर यहाँ जैविक खेती को सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है और साथ ही यह भी

समझना आवश्यक है कि वर्तमान में कितने किसान जैविक खेती की ओर अग्रसर हो रहे हैं और किन सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी बाधाओं का सामना कर रहे हैं।

इस प्रकार जैविक खेती न केवल एक वैकल्पिक कृषि पद्धति है, बल्कि यह भावी पीढ़ियों को सुरक्षित, स्वस्थ और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक आवश्यक पहल है। सीधी जिले की भौगोलिक संरचना, प्राकृतिक संसाधन, परंपरागत कृषि संस्कृति तथा किसानों की आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि यहाँ जैविक खेती के विकास की संभावनाएँ अत्यधिक प्रबल हैं।

शोध उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध पत्र सीधी जिले में जैविक खेती के विकास की संभावनाओं का विश्लेषणात्मक अध्यय करने से संबंधित निम्न उद्देश्यों को केन्द्र में रखकर प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है–

- सीधी जिले की भौगोलिक विशेषताओं का अध्ययन करना।
- सीधी जिले में जैविक खेती के प्रति किसानों की रूचि के स्तर का अध्ययन करना।
- सीधी जिले में जैविक खेती की स्थिति और किसानों की भागीदारी का मूल्यांकन करना।

उपरोक्त उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोध पत्र को वास्तविक मानकों के अनुरूप पूर्ण करने का सार्थक प्रयास किया गया है।

शोध विधि –

प्रस्तुत शोध आलेख में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन कार्य के अंतर्गत प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का संग्रह किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के लिए सीधी जिले के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों के किसानों से साक्षात्कार अनुसूची एवं प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई। वहीं द्वितीयक आंकड़े कृषि

विभाग, जिला सांख्यिकी कार्यालय, सरकारी रिपोर्ट, पूर्व प्रकाशित शोध पत्रों तथा अधिकारिक वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

भौगोलिक दृष्टिकोण से जिले की मिट्टी, जलवायु, स्थलाकृति, सिंचाई व्यवस्था और कृषि पद्धतियों का विश्लेषण किया गया है। संकलित आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला गया है। इस शोध विधि का उद्देश्य स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार जैविक खेती की उपयुक्तता का मूल्यांकन करना एवं उसकी संभावनाओं को उजागर करना है।

विश्लेषण –

' सीधी जिले में जैविक खेती के विकास की संभावनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन के अंतर्गत किए गए प्राथमिक सर्वेक्षण में कुल 300 कृषकों की प्रतिक्रियाओं का साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आंकड़ों के रूप में संकलित कर विश्लेषण किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के विकासखंडों सीधी, रामपुर नैकिन, सिहावल, मझौली एवं कुसमी से कृषकों को चयनित किया गया है, जिनमें छोटे, सीमांत तथा मध्यम स्तर के किसानों को शामिल किया गया है। सर्वेक्षण का उद्देश्य जैविक खेती के प्रति किसानों की जागरूकता, रुचि, व्यवहारिक अनुभव तथा सरकारी सहायता योजनाओं के प्रभाव को समझना है। आज कृषकों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर जैविक खेती के प्रति रुचि बढ़ रही है, परंतु इसके समुचित विकास हेतु प्रशिक्षण, बाजार व्यवस्था, बीज व खाद की उपलब्धता तथा समर्थन मूल्य आदि मुद्दों पर ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। यह अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि यदि उपयुक्त संसाधन व नीतिगत समर्थन मिले, तो सीधी जिले में जैविक खेती को एक प्रभावशाली और सतत कृषि विकल्प के रूप में विकसित किया जा सकता है।

इस अध्ययन में सीधी जिले के 300 कृषकों के बीच किये गये प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर जैविक खेती के प्रति उनकी रूचि के स्तर के संबंध में तालिका क्रमांक 01 में विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है, जो इस प्रकार है–

तालिका क्रमांक 01

सीधी जिले में जैविक खेती के प्रति किसानों की रूचि का स्तर

क्रमांक	रूचि का स्तर	कृषकों की संख्या	प्रतिशत
1.	जैविक खेती में अत्यधिक रूचि	72	24%
2.	सामान्य रूचि	114	38%
3.	संभावित रूचि (प्रशिक्षण या सहायता मिलने पर)	78	26%
4.	कोई विशेष रूचि नहीं	36	12%
कुल		**300**	**100%**

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण।

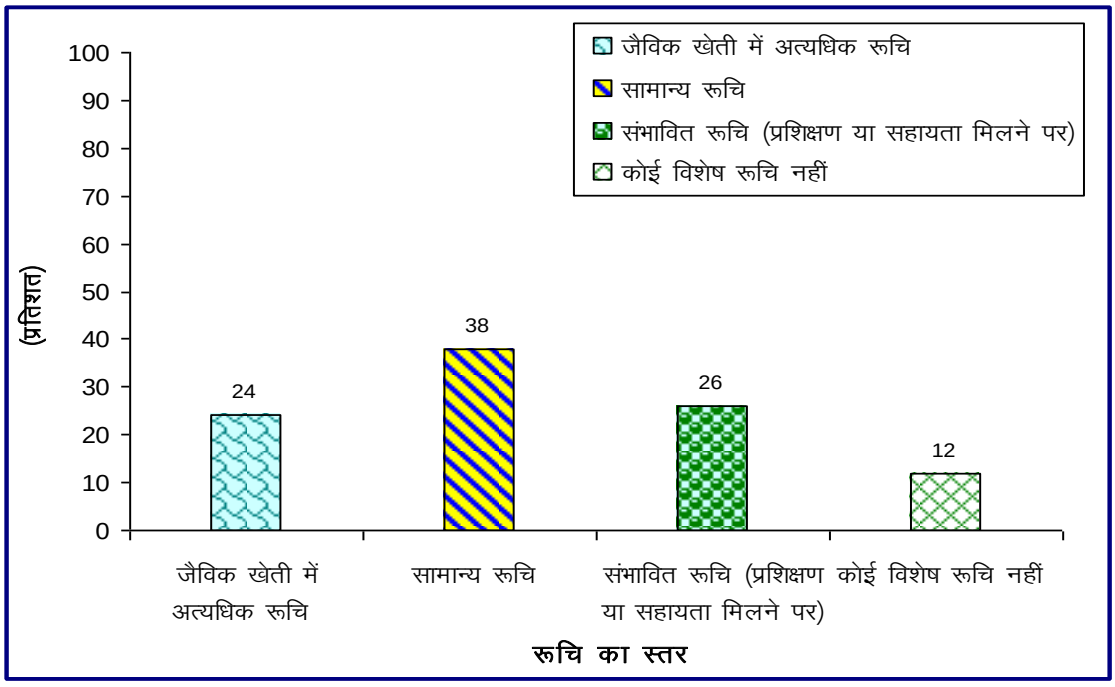

आरेख क्रमांक–1 : सीधी जिले में जैविक खेती के प्रति किसानों की रूचि का स्तर

उपरोक्त तालिका क्रमांक 01 एवं आरेख से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि सीधी जिले के लगभग 24 प्रतिशत कृषक जैविक खेती में गहरी रुचि रखते हैं और उन्होंने पहले से ही अपने खेतों में रासायनिक खादों की जगह जैविक विधियों को अपनाना प्रारंभ

कर दिये हैं। जबकि 38 प्रतिशत कृषक सामान्य स्तर की रुचि रखते हैं, जो यह दर्शाता है कि वे इस पद्धति के लाभों से पूर्वत अवगत नहीं हो सके हैं, जबकि 26 प्रतिशत कृषकों ने यह बताया कि यदि सरकार या संस्थान की ओर से प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता और बाजार समर्थन मिले, तो वे जैविक खेती अपनाने के लिए तैयार हैं। इसी प्रकार 12 प्रतिशत कृषक अभी भी पारंपरिक खेती प्रणाली के पक्षधर हैं और जैविक खेती को जोखिमपूर्ण मानते हैं। अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि सीधी जिले में जैविक खेती को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण बन रहा है और यदि नीतिगत स्तर पर उचित हस्तक्षेप किया जाए, तो अधिकतम कृषकों को इस दिशा में प्रोत्साहित किया जा सकता है।

निष्कर्ष –

अतः इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सीधी जिले में जैविक खेती की पर्याप्त संभावनाएँ मौजूद हैं। प्राथमिक सर्वेक्षण के अनुसार कृषकों में जैविक खेती के प्रति रुचि बढ़ रही है, परंतु उन्हें तकनीकी ज्ञान, प्रशिक्षण, जैविक इनपुट्स की उपलब्धता तथा उचित बाजार मूल्य आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि सरकार द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रमाणन प्रक्रिया में सरलीकरण और विपणन सुविधा को मजबूत किया जाए, तो जिले में जैविक खेती को एक स्थायी और लाभकारी कृषि प्रणाली के रूप में विकसित किया जा सकता है। कृषकों की भागीदारी और जागरूकता को बढ़ावा देकर न केवल पर्यावरण संरक्षण संभव है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सशक्त बनाया जा सकता है।

संदर्भ –

1. भारद्वाज, रामनारायण – जैविक कृषि : सिद्धांत और व्यवहार, कृषि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
2. मिश्र, अजय – जैविक खेती और सतत विकास, पर्यावरण अध्ययन प्रकाशन, भोपाल, 2020
3. शुक्ला, शैलेन्द्र कुमार – ग्रामीण भारत में कृषि परिवर्तन और नीति, नमन पब्लिकेशन, वाराणसी, 2018

4. त्रिपाठी, सुरेश कुमार – ग्रामीण विकास और कृषि नवाचार, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2019
5. गुप्ता, सुधीर – भारत में जैविक खेती की संभावनाएँ, विकास पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ, 2022
6. देसाई, संजय – जैविक कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था, संकल्प प्रकाशन, अहमदाबाद, 2023
7. सीधी जिला कृषि कार्यालय – जिला कृषि सांख्यिकी पुस्तिका, कृषि सांख्यिकी शाखा, सीधी, 2023
8. भारत सरकार – भारत में जैविक खेती पर रिपोर्ट, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली, 2022

■ ■ ■